RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-11
November -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

वैदिक एवं आधुनिक विज्ञान का समन्वय

[1]मीनाक्षी सैनी [2]डॉ. सहदेव शास्त्री

[1]शोध छात्रा स.ध. राजकीय पी.जी. महाविद्याल ब्यावर, अजमेर (राज.)
[2]शोध निर्देशक स.ध. राजकीय पी.जी. महाविद्याल ब्यावर, अजमेर (राज.)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 16 Nov 2019

Keywords
वैज्ञानिकस्तु, ऋग्वेद, कर्मकाण्ड, निःश्रेयस, ज्योलॉजी, अग्निविद्या, कर्मकौशलं, विबभूव

ABSTRACT

*ऋग्वैदिक ऋचाओं में विज्ञान का वैभव कैसा जगमग कर रहा है इसका निदर्शन करना उचित ही है। चूंकि वेदों में सर्वप्रथम स्थान ऋगवेद का ही आता है और इसका ऋग्वेद ही साक्ष्य है तस्माद् यशात्..... । ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र को देखते ही विज्ञान की खुली झांकी से मन तरंगित हो उठता है और विश्वस्त होता है कि इन संकेतों के प्रत्यक्ष द्रष्टागण समस्त जगत के वन्दनीय थे, जगद्गुरू थे। उन्ही मंत्र द्रष्टागण से भारतभूमि को जगद्गुरूओं की भूमि होने का गौरव प्राप्त हुआ। यतोहि वैज्ञानिक धर्म सब का एक जैसा नहीं हो सकता। देश काल और पात्रता के भेद से भिन्न–भिन्न होना प्राकृत्य ही है। कहा भी गया है–**''वैज्ञानिकस्तु धर्मः सर्वेषां नैकरूपःस्यात्। अपि देशकालपात्र भेदतो भिन्नतौचित्यात''**[1] भारत का वैज्ञानिक धर्म अतिसूक्ष्म हैएवं सूर्य–चन्द्र पर नियत हैं उसकी अनेकता ही उसकी विशेषता है। वेदों में वैज्ञानिक तत्वों के अन्वेषण से पूर्व यह वेदितव्य है कि हमारे वैदिक ऋषियों और भारतीय एवं पाश्चात्य वेदाध्येताओं ने 'विज्ञान' शब्द को किस प्रकार व्यक्त किया है एवं परिभाषित किया है।*

वैदिक मंत्रों में 'विज्ञान' शब्द कहीं''पराविद्या'' अर्थ में तो कहीं ब्रह्मज्ञान एवं मोक्ष विषय में प्रयुक्त है यथा **'तद्विंजिज्ञासस्व तद ब्रह्म'**[2]। **''निःश्रेयसफलं तु ब्रह्म विज्ञानम्''**[3] अन्यत्र यही 'विज्ञान' शब्द यज्ञ तथा कर्मो के विस्तार अर्थ में प्रयुक्त हैं–**''विज्ञानं यज्ञं तनुते कर्माणि तनुतेऽपि च''**[4] (तैत्तिरीय)अन्यत्र गीता में कहा गया है **''विज्ञानं कर्मकाण्डे यज्ञादि कर्मकौशलम्''**[5] अर्थात् ''कर्मकाण्ड में यज्ञादि कर्म–कौशल ही 'विज्ञान' हैं।''पण्डित मधुसूदन ओझा के शिष्य महामहोपाध्याय गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी ने 'विज्ञान' को 'यज्ञविद्या' बतलाते हुए स्पष्ट किया है कि एक का अनेक में अवतरण हो जाना विज्ञान है **''एकस्माद् अनेकस्मिन्वतरणं विज्ञानं यज्ञविद्या''**[6] चूंकि वेदविज्ञानं निःश्रेयस के साथ अभ्युदय को भी इष्ट मानता है अतः वेद के तत्त्वों में आधुनिक विज्ञान से भी उदात्तर वैज्ञानिक सिद्धातों का प्रतिपादन मिलता है। यही वैदिक विज्ञान का रहस्य है। वेदों में गूढ–विज्ञान के सन्दर्भ में विभिन्न विद्वानों के अनन्य विचार है यथा–

सायणाचार्य ने तैत्तिरीय संहिता की भाष्य–भूमिका में लिखा है ''जो कुछ भी कल्पना या व्यवहार में अभी अज्ञात है वह निश्चय ही वेद–द्वारा ज्ञात होता है यही वेद का वेदत्त्व है''। श्री एन.बी. पावगी अपनी पुस्तक ''दी वैदिक फादर्स ऑफ ज्योलॉजी'' में लिखते है.....वेद में असमाप्य वैज्ञानिक सम्पदा हैं। श्री अरविंद भी यही मानते हैं कि जो विज्ञान मनुष्य को पता नहीं, वह भी वेदों में छिपा हुआ है। भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने न केवल वैदिक ज्ञान–विज्ञान की सराहना की है बल्कि वैज्ञानिक रूप में वैदिक ऋषियों की भी सराहना की है। प्रो. मैक्समूलर लिखते हैं ''सारी आर्य जाति ही वैज्ञानिकों की जाति थी''[7] मि. हण्टर भी वैदिक ऋषियों की सराहना करते हुए लिखते हैं ''ब्राह्मणों के विज्ञान ने सब सूक्ष्म बातों के सब सूक्ष्म उत्तर दिये है।''[8] लुई जेकालियट नामक विद्वान कहते है ''आश्चर्यजनक तथ्य हैं कि एकमात्र हिन्दुओं का ईश्वरीय ज्ञान वेद ही है जिसके सिद्धांत आधुनिक विज्ञान की मान्यताओं के अनुरूप है।''[9] इस प्रकार लुई जेकलियट ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्य **''कृण्वतों विश्वमार्यम्''** ऋग्वेद को समर्थन दिया है।

अन्ततः सत्यव्रत सामश्रमी के शब्दों में ''वैदिक ग्रन्थों में विविध विद्याओं रूपी विज्ञानों के व्यापक ज्ञान के संकेत भरपूर मिलते हैं जो व्यक्ति कृषि, विज्ञान, वाणिज्य, भूगर्भशास्त्र, गणित और ज्योतिष, जलविद्या, अग्निविद्या, वनस्पति शास्त्र, प्राणिशास्त्र, शरीर विज्ञान और युद्ध विद्या आदि विद्याओं को भलीभांति जानता है, वही वेद का उपयुक्त भाष्यकार हो सकता है।'' इस प्रकार वास्तव में वेद की आधिभौतिक व्याख्या में वर्त्तमान विज्ञान के अनेक सूत्र स्पष्ट होते हैं, मगर शब्दावली के अभाव में वेद आज भी रहस्यमयी बना हुआ है। इस्लामी काल में व्यापक विज्ञानमय वैदिक साहित्य जलाकर भस्म कर दिया गया फिर भी जो शेष है वह वैदिक विज्ञान की झलक देता है।

आधुनिक विज्ञान से तुलना

''वैदिक विज्ञान विमर्श'' प्रकरणान्तर्गत हम जान चुके हैं कि आधुनिक विज्ञान से वैदिक विज्ञान कितना उच्चस्तरीय है जिसे भारतीय ही नहीं अपितु पाश्चात्य विद्वानों ने भी हृदयंगम कर स्वीकार किया है। आधुनिक विज्ञान जहाँ 'ज्ञान' में ही 'विज्ञान' को कहता है वहीं वैदिक विज्ञान ''कर्मो में कुशलता को विज्ञान'' कहता है **''कर्मकाण्डेयज्ञादि कर्मकौशलं विज्ञानं''**। यद्यपि ज्ञान और कर्म का स्वभाव भिन्न भिन्न है तथापि दोनों का एक–दूसरे के साथ अविनाभाव संबंध हैं।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

इसके अतिरिक्त जहाँ आधुनिक विज्ञान की सभी शाखाएं प्रयोग पर अवलम्बित है वहीं वैदिक विज्ञान कर्मो की कुशलता एवं कर्मविस्तार पर अवलम्बित है। इत्थं आधुनिक विज्ञान की प्रयोगमूलकता एवं वेदों की कर्ममूलकता अन्ततः एक ही मार्ग की और अग्रसर है किन्तु वैदिक विज्ञान आधुनिक विज्ञान से 10 कदम अग्रिम ही रहा है क्योंकि जहाँ–जहाँ आधुनिक विज्ञान ने वैदिक सिद्धांतो से मतभेद दिखाकर संघर्ष किया है वहाँ–वहाँ आधुनिक विज्ञान को ही घूम फिरकर वैदिक सिद्धांतों को स्वीकार करना पड़ा जो कि निम्नांकित तथ्यों से स्वतः सिद्ध होता है–

1. वैदिक विज्ञान ज्ञान से जुड़ा है इसलिये उसमें जहाँ विविधता का विवरण है वहाँ **'एकं वा इदं विबभूव सर्वम'**[10] की श्रुति का अनुकरण करते हुए विविधता के मूल में निहित एकत्व की भी उपेक्षा नहीं की गई हैं। एकत्वोन्मुखता ने वेदविज्ञान को समग्र दृष्टि प्रदान की है। आधुनिक विज्ञान के क्षेत्र में भी ''क्वाण्टम सिद्धान्त'' के साथ समग्र वैदिक दृष्टि का प्रवेश हो गया है और आधुनिक विज्ञान के साथ वैदिक ज्ञान की अपरिहार्यता उजागर होती है।
2. विश्लेषण पर बल देने वाला आधुनिक विज्ञान इस बात को समझने लगा है कि विश्लेषण की प्रक्रिया में जब हम विभेद, विभाजन, तुलना, नापतोल और वर्गीकरण करते है तो हम पदार्थ के समस्त पक्षों को न लेकर कुछ चुने हुए पक्षों को ही लेते हैं। परिणामतः पदार्थ का स्वरूप असंगत और परस्पर विरोधी प्रतीत होता है। यह असंगति और विरोध तभी दूर हो सकता है जब समग्र अन्तर्दृष्टि परक वेदविज्ञान एवं विश्लेषण परक आधुनिक विज्ञान में सामंजस्य स्थापित हो।
3. वेद मन–प्राण–वाक् में अविनाभाव संबंध को मानता है इस कारण वह मानता है कि पाषाण में भी वाक्–प्राण–मन यानि मैटर–एनर्जी–माइन्ड उपस्थित हैं भले हीवह अव्यक्त हो। अब आधुनिक विज्ञान भी वाक्–प्राण–मनस् तत्त्व को अपने में समेटने लगा है। इसी सन्दर्भ में फ्रिटजोकापरा ने लिखा है ''पदार्थ बिल्कुल ही निष्क्रिय तथा उदासीन नहीं है अपितु निरन्तर नृत्य तथा कम्पमान गति की स्थिति में है''[11]
4. वेद–विज्ञान पाषाण में मन की उपस्थिति मानते हुए संबोधित करता है–''शृणोतु ग्रावाणः''[12] इसी बात के समर्थन में ''बटेसन'' कहते है ''चट्टान सजीव समझदार विश्व का अंग होने के नाते वृहत्तर चेतना में भागीदार बनते हैं.....।[13] अन्यत्र भी इसी सन्दर्भ में 'बटेसन' लिखते है ''मुझे कहीं भी अव्यवस्थित पदार्थ नहीं दिखाई देता है।''[14]
5. आधुनिक विज्ञान के अन्तर्गत अवयव में पूर्ण अवयवी को प्रतिबिम्बित माना गया है। अतः अवयव(व्यष्टि) को देखकर अवयवी(समष्टि) का अनुमान किया जा सकता है। वेदविज्ञान में यही सिद्धान्त **''यथापिण्डे तथा ब्रह्माण्डे''** की प्रसिद्ध उक्ति में प्रकट होता है कि जो वृहत्तर स्तर पर विष्णु में है, लघुत्तर स्तर पर वही पिण्ड में है अर्थात् जिन तत्त्वों से विश्व का निर्माण हुआ है उन्हीं तत्त्वों से पिण्ड का निर्माण हुआ है।
6. जहाँ वर्तमान विज्ञान का मूल आधार विद्युत्–शक्ति हैं वहीं वैदिक विज्ञान का मूल आधार प्राण शक्ति हैं। यह प्राणशक्ति विद्युत्–शक्ति की अपेक्षा बहुत व्यापक है। विद्युत् शक्ति, प्राण शक्ति का ही एक भेद हैं और इसी प्रकार से अनन्त भेदों का समावेश प्राणशक्ति में ही हो जाता है।[15]
7. आधुनिक चिकित्सा के क्षेत्र में इस दृष्टि का प्रसार हो रहा है कि चिकित्सा किसी एक रोग विशेष की नहीं प्रत्युत् पूरे रोग की होनी चाहिये। भारतवर्ष में आयुर्वेद की यही कसौटी रही है। प्राकृतिक चिकित्सा और होम्योपैथी की चिकित्सा पद्धतियों में भी इसी रीति को अपनाया गया है।
8. महामहोपाध्याय गोपीनाथ के गुरु स्वामी विशुद्धानन्द जी सूर्य विज्ञान के जानकार थे वे किसी भी वस्तु को सूर्य किरणों–द्वारा किसी अन्य वस्तु में बदल सकते थे। उन्होनें गेंदें के फूल को गुलाब में, ढेले को मिश्री में बदल कर लोगों को दिखाया।[16]
9. वैदिक ऋचाओं के अनुशीलन से विदित होता है कि हमारे ऋषिगण अपनी अपने परिवार एवं अपने पालित पशुओं की रक्षा हेतु देवताओं की उपासना एवं स्तुति करते थे और मन्त्राराधित देवता उनकी रक्षा भी करते थे। वर्तमान में सूर्यविज्ञान द्वारा कुष्ठ रोग और नेत्र रोग का मांत्रिक उपचार हो रहा है।
10. **''विवस्वतः सदने अस्य तानि विप्रा उक्थेभिः कवयो गृणन्ति''**[17] मंत्र से विदित होता है वैदिक काल में सूर्य की किरणों की परीक्षा के लिए ''सूर्य सदन'' (सूर्य प्रयोगशाला) था। जहाँ वसिष्ठादि वैज्ञानिक ऋषिसूर्य नामक द्विचक्र यंत्र से सूर्य– चन्द्र–उषा का परीक्षण करते थे।इसके अतिरिक्त अत्रि महर्षि भी ग्रहण के समय सूर्य के अदृष्ट होने पर 'ग्रावा' नामक यंत्र का उपयोग करके ''कीरि'' एवं ''नमस्'' द्वारा प्रछन्न सूर्य को देखते थे।[18]
11. पाश्चात्य वैज्ञानिकों ने सूर्यमण्डल में दिखने वाले कालेपन को अभी अभी जाना है परन्तु हमारे वैदिक ऋषिगण इस रहस्य को आदिकाल से जानते थे। ऋग्वेद में कहा गया है ''कृष्णों नोनाव वृषभो यदीदम्''[19] जहाँ 'कृष्ण' पद से आदित्य रूप से अग्नि का निर्देश है।
12. वैदिक मंत्रों में मित्र और वरुण को ''वृष्टि का स्वामी''[20] कहा गया है साथ ही जल निर्माण में

''वरुण तत्व की प्रधानता''[21] को बताया है। इसी प्रकार के एक ऋग्वैदिक मंत्र का भाष्य करके प. गुरुदत्त ने वेद में मित्र (हाइड्रोजन) और वरूण(ऑक्सीजन) नामक वायुओं के विशेष अनुपात से बने मिश्रण में विद्युत की धारा प्रवाहित कर जल की उत्पत्ति को सिद्ध किया है।

13. **''ये पन्थानो बहवो देवयानाः अन्तरा धावा पृथिवी संचरान्ति। ते मा जुषन्तां पयसा घृतेन, यथा क्रीत्वा धनमाहराणि।।''**[22] इस मंत्र से विदित होता है कि वैदिक काल में आकाश एवं पृथिवी के मध्य बहुत से देवयान चलते थे जिनसे वैदिक ऋषि गण दूध एवं घी एवं अन्य पदार्थो का व्यापार करते थे। इस प्रकार के अनेकशः उदाहरण वैदिक मंत्रों में प्राप्य हैं जिनसे स्पष्ट होता है उस समय पृथ्वी–जल–आकाश तीनों मार्ग व्यापार हेतु प्रचलन में थे।
14. आधुनिक विज्ञान ने पहले पहल ऑक्सीजन–हाइड्रोजन आदि को मूल तत्त्व माना। अन्वेषण के बाद इन मूल तत्त्वों की संख्या बढ़ती गई यथा 65–93.....किन्तु 1942 में 'एटम्' तोड़ने पर वैज्ञानिकों ने पाया कि स्थूल तो 3 सूक्ष्म शक्तियों से ही निर्मित है–इलेक्ट्रॉन, प्रोटोन और न्यूट्रॉन, जो हमारे वैदिक विज्ञान के सत्व रजस् और तमस् के ही अपर नाम है।
15. वेदोक्त युग प्रक्रिया के अनुसार सृष्टि कुछ न्यून दो अरब वर्ष पुरानी है जबकि पाश्चात्य धर्मग्रन्थ केवल 5000 वर्ष पुरानी बताते थे किन्तु अब आधुनिक वैज्ञानिक सृष्टि को दो अरब प्राचीन मानने लगे है।
16. वैदिक विज्ञान 'शब्द' को 'आकाश' का गुण मानता है जब कि आधुनिक विज्ञान 'शब्द' को वायु का गुण सिद्ध करने में लगा रहा। परन्तु अब रेडियो के अविष्कार के बाद 'शब्द' को ईथर या स्पेस का गुण माना जाने लगा है जो कि वैदिक विज्ञान में आकाशतत्त्व के अन्तर्गत है।[23]
17. मनुस्मृति सर्वथा वेदप्रतिपाद्य विषयों की पूरक है वहाँ कहा गया है कि वनस्पति वर्ग अन्तः संज्ञ होते है और उन्हे भी सुखः दुख का अनुभव होता है **''अन्तः संज्ञा भवन्त्मेते सुखदुखसमान्विता''** इसी को आधार बना कर जगदीशचन्द्र वसु ने वैज्ञानिक परीक्षणों से वृक्षादि में प्राणसत्ता सिद्ध करके वैदिक विज्ञान को मान्यता प्रदान की है।
18. **''निर्मथ्य वद्वेदाम्बुधिं भरद्वाजो महामुनिः। नवनीतं समुद्धृत्य यन्त्रसर्वस्वरूपकम्।।''**[24] चूंकि भारद्वाज मुनि ने सर्वप्रथम अपनी पुस्तक ''यन्त्रसर्वस्व'' में ''विमान–निर्माण'' की प्रक्रिया को बताया है। उपर्युक्त श्लोक में उन्होनें स्पष्टतः लिखा है कि महामुनि भारद्वाज ने वेद रूपी समुद्र का मंथन करके ''यन्त्रसर्वस्व'' नामक नवनीत निकाला है। इससे वैदिककाल की उच्च प्रगति स्वतः सिद्ध होती है।
19. महाराष्ट्र के प्रसिद्ध विद्वान नारायण भवानीराव पावगी ने ऋग्वेद के मंत्रों के आधार पर वेदों में 'भूगर्भ विज्ञान' का मूल होना बताया है तो डॉ. वी.जी. रेले ने वेदों में 'जीव–विज्ञान' का विस्तृत वर्णन पाया है। वहीं श्री पन्यम नारायण गौड़ ने वेदों में भौतिकी और रसायन शास्त्र के तत्त्वों के स्पष्ट तथा पाये जाने को सिद्ध किया है और साथ ही यह भी लिखा है कि वेद ''शुद्ध विज्ञानों'' का ग्रन्थ है।
20. अमेरिका की विदुषी महिला ''मिसेज व्हीलर विल्लोक्स'' ने लिखा है ''भारत उन महान् वेदों की भूमि है, जो अत्यन्त अद्भुत है जिनमें न केवल पूर्ण जीवन के लिए उपयोगी धार्मिक तत्त्व बताये गये है बल्कि उन तथ्यों का भी प्रतिपादन किया गया है जिन्हे समस्त विज्ञानों ने सत्य प्रमाणित किया है। बिजली, रेडियम, एलेक्ट्रन्स, विमान एवं हवाईजहाज आदि सब चीजें वेदों के दृष्टा ऋषियों को ज्ञात प्रतीत होती है।''[25]
21. विविध ग्रन्थों के गहन अध्ययन से सूक्ष्मतम् पदार्थ से स्थूलतम पदार्थो की क्रमवार श्रेणी संभवत् इस प्रकार निर्मित है–

    (I) परमात्मा (II) जीवात्मा (III) मूल प्रकृति (IV) महत् (V) अहंकार (VI) तन्मात्र समूह (VII) पंचमहाभूत (VIII) संसार के चराचर पदार्थ उपर्युक्त श्रेणियों का अवलोकन करने पर विदित होता है कि आधुनिक साइंस केवल इन्द्रियगोचर अंतिम दो श्रेणियों के पदार्थों का वर्णन करता है जबकि वैदिक मंत्रों के अनुशीलन से स्पष्ट होता है कि वैदिक विज्ञान में उपर्युक्त समस्त आठों श्रेणियों में समाहित सम्पूर्ण चराचर जगत, महर्षि दयानन्द के शब्दों में कहें तो तृण से लेकर परमात्मा पर्यन्त समस्त पदार्थो का वर्णन प्राप्त होता है। जिससे वैदिक–विज्ञान की आधुनिक विज्ञान से सर्वोच्चता स्वतः सिद्ध होती है।

उपर्युक्त पाश्चात्त्य एवं भारतीय विद्वानों के उद्धरणों से स्पष्ट होता है कि उन्होनें किस प्रकार वेदों में आधुनिक विज्ञानान्तर्गत विविध विज्ञानों यथा भूगर्भ विज्ञान, जीव विज्ञान, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान एवं विविध आविष्कारों के तत्त्वों को मूल रूप में पाया है। इसके साथ यह भी स्पष्ट हो जाता है कि जहां आधुनिक विज्ञान में गुण और गुणी का वर्णन एवं विश्लेषण होता है वहीं वैदिक विज्ञान में परमात्मा से लेकर तृणपर्यन्त समस्त पदार्थो के गुण एवं धर्मो का वर्णन है। तैत्तिरीय आरण्य में भी यह कहा है **''ऋग्भ्यो जातांसर्वशो मूर्तिमाहुः सर्वाः गतीः याजुर्षा चैव सिद्धा''**अर्थात् समस्त मूर्त

RRIJM 2015, All Rights Reserved

पदार्थ 'ऋग' तथा समस्त गतियाँ 'यजुः' से संबंध रखती है। इत्थंवैदिक ऋषियों का विज्ञान अति उच्चतम था। वैदिक ज्ञान के विज्ञानमय होने के कारण ही भारत में पाश्चात्य विद्वानों गैलीलियों और ब्रूनों आदि की तरह अत्याचार नहीं हुए। इत्थं कथनीयं यत् जिस दिन वेद–विज्ञान तथा भौतिक (आधुनिक) विज्ञान समन्वित हो जायेंगे उस दिन वैदिक ऋषियों की विद्या तथा अविद्या सम्भूति तथा असम्भूति ज्ञान तथा कर्म के सामजस्य की कल्पना साकार होगी एवं पूर्व और पश्चिम एवं धर्म तथा विज्ञान, ज्ञान–विज्ञान के बीच की खाई पट जायेगी और वैदिक ऋषियों की उक्ति चरितार्थ होगी–

''विज्ञानेन मृत्युं तीर्त्वा ज्ञानेनामृतमश्नुते''[26]

विज्ञान–सम्बद्ध विभिन्न विद्वानों के विचारः–

'विज्ञान' शब्द 'वि' उपसर्ग पूर्वक 'ज्ञान' मूल शब्द से निष्पन्न है। इस प्रकार **''विशिष्टं ज्ञानमेव विज्ञानमेव''**अर्थात् किसी पदार्थ या वस्तु का विशिष्ट ज्ञान ही 'विज्ञान' कहलाता है। चूंकि विविध पदार्थो का तत्वान्वेषण, नवीन सिद्धान्त स्थापना एवं तदनुसार नवीन आविष्कारों का निर्माण ही आधुनिक विज्ञान का उद्देश्य है अतः आधुनिक विचारधारा में 'विज्ञान' केवल उसी विषय को कहा गया है जिसमें अध्ययन की क्रमबद्धता सिद्धान्त–निर्माण, वैज्ञानिक पद्धतियों का प्रयोग एवं परीक्षण संभव हो। इसके अतिरिक्त किसी वस्तु/पदार्थ/विचार का खोजने की कला को 'विज्ञान' माना गया है। इस प्रकार विज्ञान (Science) शब्द भौतिक विज्ञान तक ही सिमट कर रह गया जबकि 'विज्ञान' एक व्यापक शब्द है। हमारे वैदिक ऋषियों ने 'विज्ञान' शब्द को यज्ञ तथा कर्मो का विस्तार करने वाला, कर्मकाण्ड में यज्ञादि कर्म कौशल, यज्ञविद्या, पराविद्या, ब्रह्मज्ञान इत्यादि रूपों एवं विषयों में प्रयुक्त किया है जिसे विज्ञान–विमर्श प्रकरण के अन्तर्गत स्पष्ट कर दिया गया है। समयानुसार अब आधुनिक विचारधारा वाले विद्वज्जन की सोच में परिवर्तन आया है वे भी 'विज्ञान' को ज्ञान की सम्पूर्णता का सूचक मानने लगे है। वे मानते है कि वर्तमान में जिन विज्ञानों का प्रादुर्भाव है वे वैदिक युग में मौजूद थे किन्तु परवर्तीकाल में अज्ञानान्धकार से वह ज्ञान रूपी प्रकाश लुप्त हो गया था। वर्तमान विद्वज्जन उन्हीं वैदिकमंत्रों का आलोडन, विलोडन, अनुशीलन कर ज्ञान–विज्ञान एवं आविष्कारों का प्रकटीकरण कर रहें है। वैदिक विज्ञान को समग्र एवं व्यापक मानते हुए विविध विद्वानों ने 'विज्ञान' को जिस प्रकार परिभाषित किया है वह द्रष्टव्य है–

1. वेदों में विज्ञान के प्रथम भारतीय अन्वेषक ऋषि दयानन्द 'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका' के 'वेदविषयक विचार' प्रकरण में लिखते हैं वेद के प्रतिपाद्य विषय चार हैं– विज्ञान, कर्म, उपासना, ज्ञान। जहाँ विज्ञान को परिभाषित करते हुए उन्होनें कहा है ''कर्म–उपासना और ज्ञान इन तीनों को यथावत् उपयोग लेना और परमेश्वर से लेकर तृणपर्यंत पदार्थो का साक्षात् बोध करना ही विज्ञान है''।[27]
2. वेदगोष्ठी समारोह, अक्टूबर 1979 के अवसर पर पठित अपने निबन्ध 'सायंस और वेद' में गुरुदत्त एम. एस.सी. ने लिखा है 'सायंस(आधुनिक विज्ञान) केवल इन्द्रियों से जाने जा सकने योग्य पदार्थो का वर्णन कती है जबकि विज्ञान (वैदिक विज्ञान) इन्द्रियों से जाने जा सकने योग्य पदार्थो के साथ साथ इन्द्रियातीत पदार्थो के वर्णन से सम्बद्ध है।'[28]
3. आचार्य शौनक ने कहा है **'विज्ञापयति विज्ञानं कर्म्माणि विविधानि च'** अर्थात् देवज्ञान से ही मन्त्रगत ऋषियों के अभिप्रायों और विविध कर्मो में छिपे विज्ञान का उद्घाटन होता है।
4. ''भल्लूराम खीचड'' ने अपने निबंध 'वेद–विज्ञान में चतुष्पाद ब्रह्म' में लिखा है 'एक से अनेक की ओर जाना 'विज्ञान' है। यही सृष्टि है। अनेक से एक की ओर आना, ज्ञान है यही मुक्ति है। ज्ञान–विज्ञान के बिना अधूरा है, विज्ञान बिना ज्ञान के अधूरा है। दोनों के समन्वय से ब्रह्म का पूर्ण ज्ञान होता है।
5. श्री पन्यम नारायण गौड़ ने अपनी पुस्तक 'Introduction to the Message of the 20thCentury' में लिखा है''वेद शुद्ध विज्ञानों के ग्रन्थ है''।
6. डॉ. सहदेव शास्त्री ने अपने निबंध ''ऋग्वैदिक विविध वनस्पति विज्ञान'' में कहा है ''विशेषं विविधं पदार्थज्ञानं यास्मिन् तद्विज्ञानमिति।''
7. प. भगवद्दत ने 'Science' और इसके मूल लैटीन शब्दा 'Scientia' को भारतीय ''सांख्य'' शब्द का अपभ्रंश माना है।[29]
8. पाश्चात्त्य वनस्पति विद्वानों के मत में 'Science' शब्द की उत्पति लैटिन शब्द 'Scire Root' से है जिसका अर्थ जानना, पृथक्करण एवं विशेषीकरण है।
9. विविध शब्दकोषों में 'Science' का अर्थ 'Knowledge' किया गया है।
10. गीता में ''विज्ञान'' शब्द को 'रहस्य' अर्थ में प्रयुक्त किया है–**''ज्ञानं तेऽहं सविज्ञानमिदं वक्ष्याम्यशेषतः''**[30]

निष्कर्ष :–

इत्थं संक्षिप्तरूपेण हम कह सकते हैं कि वैदिक विज्ञान में वर्त्तमान साइंस के समान धर्म, मोक्ष या अतीन्द्रिय व्यापक तत्त्वों से अपने संबंध को हटाया नहीं गया है अपितु वहाँ ज्ञान और विज्ञान सहभावेन पुष्ट होते हैं। वेदों में जिन धर्म तत्त्वों और मोक्ष तत्त्व की चर्चा प्रधानतया हुई है वह अनुभव सिद्ध वैज्ञानिक प्रक्रिया से होने के कारण ही 'आत्मविज्ञान', 'धर्मविज्ञान','ब्रह्मविज्ञान' आदि प्रचलित हुए हैं। यही वह बिन्दु भी है जहाँ ''वर्त्तमान साइंस'' की प्रक्रिया भी

RRIJM 2015, All Rights Reserved

आकर सम्मिलित होती हुई अपनी उपलब्धियों को वैदिक सन्दर्भों के परिप्रेक्ष्य में स्पष्ट करती है। चूंकि वैज्ञानिक धर्म सब का एक जैसा नही हो सकता उसमें भिन्नता होना प्राकृत्य है। हमारे वैदिक ऋषियों का वैज्ञानिक धर्म सूक्ष्मतम है। अथर्ववेद की एक श्रुति में कहा भी गया है कि जिस प्रकार परमात्मा का काव्य जीर्ण एवं मर्त्य नहीं है अर्थात् उसी प्रकार वैदिक ऋषियों के उपदेश जीर्ण एवं मर्त्य नहीं है। अर्थात् उनके उपदेश सदैव व्यावहारिक एवं उपयोगी हैं।

"पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति"।[31]

संदर्भ सूची

1. इन्द्र विजय, पं. मधुसूदन ओझो पृ.सं. 111
2. 3 भूमिका भास्कर, स्वामी विद्यानन्द सरस्वती पृ. सं. 184 संस्करण प्रथम 1988
3. तै. आ.(8.5.1), तैत्रिरीय उपनिष्द(2.5)
4. महर्षि कुलवैभवम उपोद्घात पृ.सं. 3
5. 3 वेद परिचायिका, डॉ कृष्णवल्लभ पालीवाल पृ.सं. 8
6. 5 वेदों का महत्त्व, सं. आचार्यसत्यानन्द वैष्ठिक पृ.सं. 85 संस्करण प्रथम 2013
7. भूमिका भास्कर, स्वामी विद्यानन्द सरस्वती पृ.सं. 13 प्रथम संस्करण 1998
8. श्रीमद् भगवद् गीता(18.42)
9. वैदिक विज्ञान, स.डा.दयानन्द भार्गव पृ.सं. 13, प्रथम संस्करण 1997
10. तैत्रिरीय संहिता (1.3.13.1)
11. Uncommon Wisdom, बट्रेसन, पृ.सं. 148
12. Uncommon Wisdom, बट्रेसन, पृ.सं. 85
13. ऋग्वेद(6.4.29)
14. वैदिक विज्ञान सं. डॉ. दयानन्द भार्गव पृ.सं. 15 प्रथम संस्करण 1997
15. वैदिक साहित्य और संस्कृति, आचार्य बलदेव उपाध्याय पृ.सं. 16 पंचम् संस्करण 1998
16. वैदिक विज्ञान, सं. डॉ. दयानन्द भार्गव पृ.सं. 15 प्रथम संस्करण 1997
17. ऋग्वेद (3.34.7)
18. ऋग्वेद (5.40.5–9)
19. भूमिका भास्कर, स्वामी विद्यानन्द सरस्वती पृ.सं. 133 प्रथम संस्करण 1988
20. ऋग्वेद (1.79.2)
21. सायंस और वेद, गुरुदत्त एम.एस.सी. संस्करण प्रथम 1979
22. भूमिका भास्कार, स्वामी विद्यानन्द सरस्वती पृ.सं. 133 प्रथम संस्करण 1988
23. वेदों का महत्त्व, सं. आचार्य सत्यानन्द नैष्ठिक पृ.सं. 29 प्रथम संस्करण2013
24. वैदिक विज्ञान, सं.दयानन्द भार्गव, पृ.सं. 80 प्रथम संस्करण 1997
25. वैदिक विज्ञान, सं.दयानन्द भार्गव, पृ.सं. 84 प्रथम संस्करण 1997
26. वेदों का महत्त्व, सं. आचार्य सत्यानन्द नैष्ठिक पृ.सं. 27 प्रथम संस्करण 2013
27. वेदों का महत्त्व, सं. आचार्य सत्यादन्द नैष्ठिक पृ.सं. 21 प्रथम संस्करण 2013
28. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, महर्षि दयानन्द, वेदविषयक विचार प्रकरण पृ.सं. 44
29. सायंस और वेद, गुरुदत्त एम.एस.सी. प्रथम संस्करण 1979
30. वेद और विज्ञान, विद्याभास्कर प्रेमचन्द शास्त्री पृ.स. 85 द्वितीय संस्करण
31. अथर्ववेद(10.4.32)

RRIJM 2015, All Rights Reserved